Meetings of Our Advisory Committee

जे.के. आई.टी. है महान्

शिक्षा जगत का है वरदान
जे.के.आई.टी है महान
दिलाता है, हमको यह पहचान
दिया इसने है, हमको ज्ञान
सदा करना इसका सम्मान
हमें बढ़ानी है, इसकी शान
शिक्षा जगत का है वरदान
जे.के.आई.टी. है महान
गाँवों से आये, हम शहरों से आए
लगता है जैसे, घर को आए
पायाहै हमने तकनीक का ज्ञान
इससे बढ़ा हमारा अभियान
आगे ही आगे है, बढ़ना हमें
राष्ट्र सेवा ही करना हमें
दिया इसने है, हमको ज्ञान
सदा करना इसका सम्मान
शिक्षा जगत का है वरदान
जे.के.आई.टी. है महान।

मानकुँवर
ट्रेड-आई.सी.टी.एस.एम.
(प्रथम सेमेस्टर)

हुनर का महत्व

एक युवक कार से यात्रा कर रहा था। शहर से बहुत दूर जंगल में उसकी कार खराब हो गई। युवक ने उसे ठीक करने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह ठीक नहीं हो सकी। संयोग से एक मैकेनिक उधर से जा रहा था। युवक ने उससे कार ठीक करने को कहा! वह बोला, ''कार ठीक कर दूँगा, पर एक हजार रूपये लूँगा।'' युवक निरूपाय था। उसने अपनी स्वीकृति दे दी । मैकेनिक ने कार के इंजन को देखा, हथौड़ा हाथ में लिया, एक बार इंजन पर चोट की और कार स्टार्ट हो गई।

युवक विस्फारित आँखों से उसकी ओर देख रह था। काम पूरा होने पर उसने एक हजार रूपये माँगे। युवक ने कहा ''वाह! क्या एक चोट के एक हजार रूपये ?'' मैकेनिक मुस्कराते हुए बोला-''बाबूजी! यह एक हजार रूपये चोट करने के नहीं है, चोट करने का मूल्य एक रूपया है। शेष 999 रूपये तो इसलिए है कि चोट कहाँ, किस समय और कैसे करनी है।

युवक को समाधान मिल गया।

मधुसूदन टाँक
ट्रेड-रेफ्रीजरेशन एण्ड ए.सी. मेकेनिक
(तृतीय सेमेस्टर)

उम्मीद

उम्मीदों के समन्दर का,
कहाँ कोई तल होता है।
उगते हुए सूरज के लिए तो,
सारा जहाँ समतल होता है।।

आशाओं के उजाले से तो,
कण-कण चमकता है।
प्रयासों के आगे तो नभ भी,
नतमस्तक होता है।।

इन मुश्किल राहों में,
कोई कण-कंटक, कोई पत्थर होता है।
पर मंजिलों का द्वार आखिर,
फूलों से ही सजता है।।

विपत्ति में घबराने से,
कहाँ कुछ हल होता है।
आखिर कर्मों के तूफानों से ही,
सुनहरा कल होता है।।

विनित कमाली
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन
(तृतीय सेमेस्टर)

सुनहरा अवसर

कल पर कोई काम न छोड़ो,
काम आज का अभी करो।

सम्मुख खड़ी सफलता है,
उसका पूरा मान करो।।

तुम करते हो कल की बात ''व्यर्थ'',
कल को कब किसने देखा।

अगला पल जाने हो कैसा,
जाने हो विधि का क्या लेखा।।

जो आलस में पड़ जाते हैं,
वह अवसर सभी गंवाते हैं।

जो काम देखकर डर जाते,
वह कायर जन कहलाते हैं।।

दिनेश कुमार बैरवा
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन

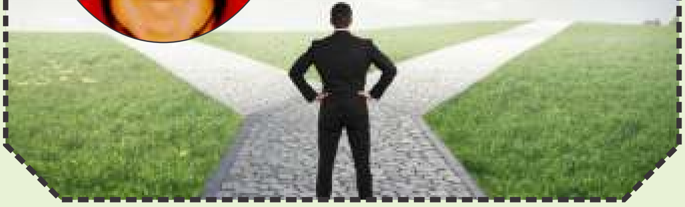

एकता

ये पेड़, ये पत्ते, ये शाखें भी परेशान हो जाए,
अगर परिन्दे भी हिन्दू और मुसलमाँ हो जाए।
न मस्जिद को जानते हैं, न शिवालों को जानते हैं,
जो भूखे पेट होते है, वो सिर्फ निवालों को जानते हैं।।
मेरा यही अंदाज जमाने को खलता है कि,
मेरा चिराग हवा में खिलाफ क्यों जलता है।
मुझे अमन पसंद है, मेरे शहर में झण्डा रहने दो,
लाल और हरे में मत बाँटों, मेरी छत पर तिरंगा रहने दो।।

यशवन्त तेली
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन

अर्थ ऑवर

वर्तमान में सारा संसार पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से त्रस्त है। इस कारण सभी देश ग्लोबल वार्मिंग से मुक्त होने का प्रयास कर रहे है। इसी दृष्टि से सन् 2007 में सिडनी में अर्थ-ऑवर की शुरूआत की गई।

तब से प्रतिवर्ष 23 मार्च को अर्थ-ऑवर में सम्मिलित होने वाले लोग रात 8.30 बजे से एक घण्टे तक घरों की बिजली बंद रखते हैं। इस वर्ष अर्थ-ऑवर के इस अभियान में लगभग दो अरब लोगों ने भाग लिया। इसकी लोकप्रियता ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप दे दिया और अब 150 देश इसके समर्थक है। यह आयोजन प्रतिकात्मक है, जो हमें धरती और पर्यावरण का सम्मान करना सिखाता है। इस अभियान से ग्रीन हाऊस गैसों के खतरनाक उत्सर्जन को रोकने तथा पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलती है।

भरत माली
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन

मंत्री की चतुराई

किसी शहर में एक राजा रहता था। उसके तीन बेटे थे। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसे यह चिंता सताने लगी कि अपने तीनों बेटों में से अपना राज्य किसको दूँ, ताकि वह प्रजा को खुश रख सके। परन्तु उसे कुछ नहीं सूझा। इसके लिए उसने अपने मंत्री को बुलाया और अपनी चिंता का कारण बताया।

उनके मंत्री ने कहा- महाराज, अगर आपको यह देखना है कि आपका कौसा-सा बेटा राज्य को खुश रख सकता है, तो आप 100-100 रूपये तीनों बेटों को दे दीजिए और 2 दिन में एक कमरे को पूरा भरने के लिए कहिए और जो राजकुमार 100 रूपये में पूरा कमरा भर देगा, उसे राजा बना दीजिएगा।

राजा ने वैसा ही किया, जैसा उसके मंत्री ने कहा था। दो दिन बाद वह एक-एक कमरे में जाकर देखने लगा। जब वह पहले बेटे के कमरे में गया तो उसने देखा कि पूरे कमरे में घास-फूस भरा हुआ है। राजा दूसरे बेटे के कमरे में गया तो वह खाली था, क्योंकि उसके दूसरे बेटे ने सारे पैसे खर्च कर दिये थे। फिर वह तीसरे बेटे के कमरे में गया, जहाँ पर बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी। वहाँ पर उसने देखा कि उस कमरे में बहुत सारी अगरबत्तियाँ जल रही थी। उसने तीसरे बेटे को राजा बना दिया।

उसी प्रकार हमें भी अपने व्यवहार से सबका दिल जीत लेना चाहिए।

विजय कुमार
ट्रेड-फीटर (प्रथम सेमेस्टर)

हिन्दुस्ताँ हमारा है

पता क्या पूछता है मुल्क में किसका गुजारा है,
मेरी नजरों में देखो मुल्क का दिलकश नजारा है।

मेरी हाथों की रेखा में, ये नक्शे हिन्द सारा है
लहू के आखरी कतरे ने हिन्दुस्ताँ पुकारा है।।

मेरा दिल है मेरी जाँ है, मेरी आँखों का तारा है
ये हिन्दुस्ताँ.. हमारा है।

हमारे मुल्क में हिन्दु-मुसलमाँ साथ रहते हैं,
हमारी सरहदों पर नौ जवाँ दिन-रात रहते हैं।।

मिटा देते हैं खुद को वो, जिनको हिन्द प्यारा है,
ये हिन्दुस्ताँ.. हमारा है।

पता क्या पूछता है मुल्क में किसका गुजारा है,
मेरी नजरों में देखो मुल्क का दिलकश नजारा है।।

निरज कुमार शर्मा
रेफ्रीजरेशन एण्ड ए.सी. मेकेनिक
(प्रथम सेमेस्टर)

ऐसा मेरा देश हो

लहराती हरियाली हो, महकाता मधुवेश हो।
नई जिन्दगी झूमे जिसमें, ऐसा मेरा देश हो।।

हर घर में हो नया तराना, हर घर में गीत नया।
मेहनत की ममता में डूबा, जागे फिर संगीत नया।।

नए रंग हो नव उमंग हो, नई बात हो, नए ढंग हो।
नव विकास की नई किरण में, तम का कहीं न लेख हो ऐसा मेरा देश हो।

पर्वत को भी तोड़ चले जो, टकराए तूफान से।
कोटि चरण प्रस्थान करें, नव पौरूष से अभियान से।।

गगन गहराता गूंजे गान, जागे सारा हिन्दुस्तान।
डगर-डगर से नगर-नगर से, निविड़ तमिश्रा शेष हो।
ऐसा मेरा देश हो।।

मिट्टी का मोती मुस्काए, खेतों में खलिहानों में।
अपनेपन का दीप नया फिर, जागे नए किसानों में।
अपनी धरती हो निर्धन की, पूरी हो आशा जन-जन की।
कोई रहे न भूखा नंगा, ना कोई दरवेश हो।।

ऐसा मेरा देश हो।
ऐसा मेरा देश हो।।

शाहबाज खान
ट्रेड-वेल्डर (प्रथम सेमेस्टर)

बेटी की शिकायत

कुछ नहीं समझ में आया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?
भैया जागा तू दौड़ गई,
बेटी को रोते छोड़ गई।।
भैया तो तेरा अपना है,
बेटी तो झूठा सपना है।
भैया को गले लगाया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?
भैया के खूब खिलौने हैं,
सोने के साफ बिछौने हैं।
मेरा जो बिस्तर फैला है,
वह फटा पुराना मैला है।।
क्या उसको कभी धुलाया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?
भैया को दूध पिलाती तू,
जो माँगे वही दिलाती तू।।
जो वह दे वही खिलाती तू,
मेरे हित हाथ हिलाती तू।
मैंने नित रूखा खाया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?
भैया का जन्म मनाती तू,
मोटा-सा केक बनाती तू।
उसके सब मित्र बुलाती तू,
मेरे सब मित्र भुलाती तू।।
भैया से केक कटाया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?
अब मैं भी पढ़ने जाऊँगी,
मैं नई चेतना लाऊँगी।
मेरा भी जन्म मनाऊँगी,
हक बराबरी का पाऊँगी।।
मैंने यह संकल्प उठाया माँ,
किसने यह भेद सिखाया माँ ?

कमलेश धूत
ट्रेड-ए.ओ.सी.पी. (प्रथम सेमेस्टर)

जाग परिन्दे जाग

चीर तिमिर को प्राची ने एक फूल खिलाया है,
जाग परिन्दे जाग अब दिनकर आया है।

तू किस स्वप्न में मगन है, भंवरों से गुंजार चमन है,
धूप तेज होने लगी दुनियाँ घर से चलने लगी।

तू हताश बैठा नीड़ में ऐसा क्या गंवाया है,
जाग परिन्दे जाग अब दिनकर आया है।

रख हौसला, भर उड़ान हो जाएगा तेरा सारा जहान,
अपनी रगो में नई उमंग नया जोश भर बढ़ा।

कदम युद्ध का उद्घोष कर आँख मिला,
तूफानों से तेरे भाग्य समर आया है।
तुझे किसका भय सताया है,
जाग परिन्दे जाग अब दिनकर आया है।

मोहम्मद आफताब अशरफी
ट्रेड-वेल्डर (प्रथम सेमेस्टर)

कोशिश

कोशिश करने वालों की, कभी हार नहीं होती.........

एक बार राजा को ईनाम में दो बाज मिलते हैं जो बहुत ही सुन्दर थे। राजा उनको लेकर अपने ट्रेनर के पास जाता है और कहता है कि वह इन दोनों को ट्रेण्ड करे। कुछ महिनों बाद ट्रेनर राजा के पास जाकर कहता है कि उन दोनों में से एक बाज तो बहुत दूर-दूर तक उड़ रहा है, किन्तु दूसरा बाज पेड़ पर ही बैठ जाता है, वह उड़ नहीं पा रहा है। यह सुनकर राजा अपने आसपास के सभी बड़े डॉक्टरों को बुलाता है, लेकिन कोई भी उस बाज का सही ईलाज नहीं कर पाया।

कुछ दिनों बाद राजा के मन में एक विचार आता है। वह पास के एक गाँव से एक किसान को बुलाता है, जो कि जानवरों के बारे में अच्छी जानकारी रखता है। राजा किसान को कहता है कि तुम्हें इस बाज को उड़ाना है।

अगली सुबह सभी देखते हैं कि वह बाज उड़ रहा है, यह देखकर राजा बहुत खुश होता है और उस किसान को दरबार में बुलाकर पूछता है कि तुमने यह कैसा किया ? जो काम बड़े-बड़े डॉक्टर नहीं कर सके वह तुमने एक ही रात में कैसे कर दिया। किसान कहता है कि यह मेरे लिए बहुत ही आसान था। जिस टहनी पर वह बैठा था, जहां से वह उड़ नहीं रहा था, तो मैंने उस टहनी को ही काट दिया, जिससे वह गिरने लगा और उड़ने की कोशिश करने लगा। कोशिश करते-करते वह उड़ने लगा और इस तरह से वह उड़ने में सफल हो गया। यह सुनकर राजा बहुत ही खुश हुआ और किसान को बहुत सारा ईनाम भी दिया।

तो दोस्तो, असल जिन्दगी में भी ऐसा ही होता है, कुछ लोग टहनी पर ही बैठे रहते है, उस टहनी का नाम है आरामदायक जिंदगी। वे लोग रोजाना वही जिन्दगी जीते है और उससे कभी बाहर नहीं निकलते, ना ही कोई मेहनत करते हैं। कुछ लोगों को ऐसी जिन्दगी से ही प्यार है क्योंकि इस लाईफ में कोई संघर्ष नहीं है, कोई मेहनत नहीं है। ये ही लोग चार-पाँच साल बाद सोचते हैं कि काश मैं उस समय यह कर लेता या वह कर लेता, तो आज मैं कहीं और होता।

आपके पास बहुमूल्य समय है, जब आप कुछ कर सकते हो, ताकि आने वाले सालों में आपको यह सोचना ना पड़े कि काश उस समय मैं वह कर लेता या यह कर लेता।

अतः ''आपके पास अभी पूरा समय है, आप जीवन में कुछ भी कर सकते हो।''

कृष्णपाल सिंह
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन (प्रथम सेमेस्टर)

प्यारी माँ

हमारे हर मर्ज की दवा होती है माँ......
कभी डांटती है हमें, तो कभी गले लगा लेती है माँ....
हमारी आँखों के आँसू, अपनी आँखों में समा लेती है माँ.....
अपने होठों की हँसी, हम पर लुटा देती है माँ.......
हमारी खुशियों में शामिल होकर, अपने गम भुला देती है माँ......

जब भी कभी ठोकर लगे, तो हमें तुरन्त याद आती है माँ....
दुनियाँ की तपिश में, हमें आँचल की शीतल छाया देती है माँ.....
खुद चाहे कितनी थकी हो, हमें देखकर अपनी थकान भूल जाती है माँ.....
बात जब भी हो लजीज. खाने की, तो हमें याद आती है माँ......

रिश्तो को खूबसूरती से निभाना सिखाती है माँ......
लब्जों में जिसे बयाँ नहीं किया जा सके, ऐसी होती है माँ.......
रब भी जिसकी ममता के आगे झुक जाता है, वो होती है माँ......

अर्शी खान
ट्रेड-कोपा (प्रथम सेमेस्टर)

पढ़ने के लिए समय कहाँ है ?

अक्सर सुनने में आता है कि फलाँ लड़का/लड़की परीक्षा में फेल हो गया/गई। इसमें उनको कोई दोष नहीं। भला मात्र 365 दिनों में कहीं पढ़ाई होती है........ ? विश्वास नहीं आता तो खुद हिसाब लगा लीजिए कि पढ़ाई के लिए समय है कहाँ:

- साल में कुल 365 दिन।
- रविवार : 52 (रविवार आराम करने का दिन), बचे 313 दिन।
- गर्मी की छुट्टियाँ : 50 (भीषण गर्मी में पढ़ाई बेहद मुश्किल), बचे 263 दिन।
- 8 घंटे की रोज नींद : मतलब साल में लगभग 122 दिन। बचे 141 दिन।
- 1 घंटे रोज खेलना (क्योंकि खेलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है) अर्थात् वर्ष में लगभग 15 दिन, बचे 126 दिन।
- 2 घण्टे रोज दैनिक कार्य अर्थात् खाना, नहाना आदि (वर्ष में 30 दिन), बचे 96 दिन।
- 1 घंटे मित्र के साथ बातचीत : (मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है) अर्थात् 15 दिन, बचे 81 दिन।
- वर्ष में परीक्षा के दिन: (लगभग 35 दिन), बचे 46 दिन।
- दीपावली, दशहरा, होली, रक्षाबंधन आदि त्यौहार लगभग 20 दिन, बचे 26 दिन।
- साल भर में बीमारी आदि 15 दिन, बचे 11 दिन।
- फिल्मों, शादी-ब्याह आदि के लिए : 10 दिन, बचा 1 दिन। उस ''एक'' दिन तो मेरा बर्थ-डे होता है।

भला बताइए, कोई कैसे पढ़ेगा, और कैसे पास होगा।

चन्द्रेश पुरोहित
ट्रेड-ड्राफ्ट्समेन मैकेनिकल
(प्रथम सेमेस्टर)

ग़ज़ल

दौराने सफ़र मील का पत्थर नहीं देखा,
चलते हुए पीछे कभी मुड़कर नहीं देखा ।
होती है प्यास क्या ये परिन्दों से पूछिए,
तुमने कभी ऊँचाई पर चढ़कर नहीं देखा ।।

चालाकियाँ तो हमको भी आती जरूर है,
दिल ने इन रवायतों पे चलकर नहीं देखा ।
सूरज हमारे हिस्से का हमसाया ले गए,
आँगन में हमने धूप का मंजर नहीं देखा ।।

ये जात-पात नफरतें ले जाएगी कहाँ,
इस लंबे सफर का कोई रहवार नहीं देखा ।
देना तो है उसी का किसी की खबर न हो,
अखबार की जुबां में दातावर नहीं देखा ।।

हाथों की लकीरों को जो पढ़ते है रात-दिन,
लेकिन उन्होंने अपना मुकद्दर नहीं देखा ।
खुद की संवारने की तो आदत नहीं रही,
तारीफ उसने की नहीं हंसकर नहीं देखा ।।

सारे जहाँ में यकसाँ है रातों की दासताँ,
सुना किसी भी रात में बिस्तर नहीं देखा ।
शिक्वे शिकायतें तो अब रौनक फजूल है,
हमने पिंघलता कोई भी पत्थर नहीं देखा ।।

रोमिल राव मराठा
ट्रेड- रेफ्रीजरेशन एण्ड ए.सी. मैकेनिक
(तृतीय सेमेस्टर)

संत की सीख

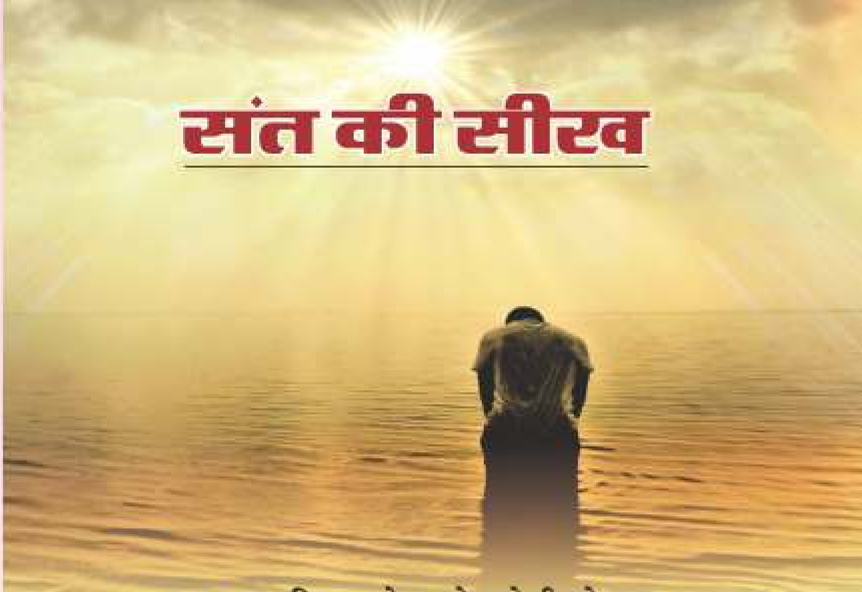

एक बार एक किसान ने अपने पड़ोसी को भला बुरा कह दिया, पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया। उसने संत से अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा।

संत ने किसान से कहा !''तुम खूब सारे पंख इकट्ठा कर लो, और उन्हें शहर के बीचों-बीच जाकर रख दो।'' किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुँच गया।

तब संत ने कहा, ''अब जाओ और उन पंखों को इकट्ठा करके वापस ले आओ।

किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर-उधर उड़ चुके थे और किसान खाली हाथ संत के पास पहुँचा। तब संत ने किसान से कहा कि ठीक ऐसा ही तुम्हारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है। तुम आसानी से इन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो, पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि कुछ कड़वा बोलने से पहले यह याद रखें कि भला-बुरा कहने के बाद कुछ भी कर के अपने शब्द वापस नहीं लिए जा सकते है। आप उस व्यक्ति से जाकर क्षमा जरूर मांग सकते है और मांगनी भी चाहिए। जब आप किसी को बुरा कहते है, तो वह कष्ट पहुँचाने के लिए होता है, पर बाद में वह कहा गया बुरा आप ही को अधिक कष्ट देता है। खुद को कष्ट देने से क्या लाभ, इससे अच्छा तो है, चुप रहा जाए।

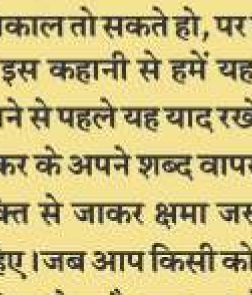

दीपक गर्ग
ट्रेड- इलेक्ट्रीशियन
(प्रथम सेमेस्टर)

बस एक कदम और

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा,
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।
अम्बर के नीचे उस बदली के पीछे कोई तो किरण होगी,
इस अंधकार से लड़ने को कोई तो किरण होगी।
बस एक कदम और इस बार उजाला होगा।।
जो लक्ष्य को भेदे वो तीर कहीं तो होगा,
इस तपती भूमि में कहीं नीर तो होगा।
बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कोई तो राह होगी,
अपने मन को टटोलो कोई तो चाह होगी।।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कदम हमारा होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा,
बस एक कदम और इस बार इशारा होगा।

धीरज छपरीबंद
इलेक्ट्रीशियन (प्रथम सेमेस्टर)

छोटे से बड़े

एक दिन बोली मुझसे नानी, मैं कहती तुम सुनो कहानी।
एक खेत बिन जुता पड़ा था, ऊबड़-खाबड़ बहुत बड़ा था।।
कोई चिड़िया बीज उठाकर, उड़ती-उड़ती गई डालकर।
हवा डराती धूप जलाती, मिट्टी उसको खूब दबाती।।
मिट्टी की गोदी में रहकर, सूरज की किरणों में जलकर।
कहा बीज ने हाय-अकेला, पर न डरूँगा भले अकेला।।
कुछ दिन बीते अंकुर फूटे, कोमल-कोमल पत्ते फूटे।
बीज बन गया पौधा प्यारा, हरा-भरा लहराता प्यारा।।
पौधे से बढ़ पेड़ कहाया, दूर-दूर तक फैली छाया।
बस जितने भी बड़े बने हैं, छोटे से बढ़ बड़े बने है।।

लोकेन्द्र सिंह
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन (तृतीय सेमेस्टर)

पोस्ट ऑफिस में चोर

एक पोस्ट ऑफिस में डाक छाँटी जा रही थी। 10-15 डाकिये डाक छाँटने में लगे हुए थे कि एक व्यक्ति की नजर में एक लिफाफा आया। लिफाफे पर ईश्वर को मिले लिखा हुआ था और लिखावट भी बहुत खराब थी। डाकिये की उत्सुकता जागी, उसने लिफाफा खोला। लिफाफे में एक वृद्ध महिला का पत्र था, जिसमें लिखा था कि उसके पास कुल पूंजी 500रूपये थी और उसे भी चोर ले गये। वृद्धा ने भगवान से आग्रह किया कि वह कहीं से 500 रूपये की व्यवस्था कर दे, अन्यथा बुढ़िया को पूरा महिना भूखा रहना पड़ेगा। डाकिये ने वह पत्र अपने साथी को दिखाया। सभी के दिल में दया आई और जिसके पास जो कुछ भी राशि जेब में थी, वह निकाल कर रख दी। गिनकर देखा तो 450 रूपये ही हुए थे। डाकिये ने वह राशि दूसरे दिन विशेष डाक द्वारा बुढ़िया के पते पर भेज दी।

एक सप्ताह बाद डाकिये की नजर वैसे ही पत्र पर पड़ी। हुबहू वहीं लिखावट थी। डाकिया पहचान गया और वह लिफाफा खोला, लिफाफे में एक छोटा सा पत्र था, जिसमें लिखा हुआ था-

''प्रिय भगवान'' 500 रूपये के लिए धन्यवाद। यदि आपने पैसे नहीं भेजे होते तो मुझे पूरे महिने भूखा रहना पड़ता, और एक खास बात यह है कि भेजे गए रूपयों में 50 रूपये कम थे। ऐसा लगता है कि ये पैसे पोस्ट ऑफिस में बैठे हुए चोरों ने ले लिये।

लोकेश पुरोहित

ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन (प्रथम सेमेस्टर)

एक शिक्षक

मैं एक शिक्षक हूँ,
देश के भविष्य का रक्षक हूँ
हाँ मैं एक शिक्षक हूँ

सबको पढ़ाई का पाठ पढ़ाना
मानवता के पथ पर मैं ले जाता

सहता हूँ बच्चों की सब शैतानी
जानता हूँ इनकी है सब नादानी

मेरी बस एक है मात्र चाह
बच्चों की उज्ज्वल हो हर राह।

राहुल धाकड

ट्रेड-रेफ्रीजरेशन एण्ड ए.सी. मैकेनिक

(तृतीय सेमेस्टर)

बड़ो की कद्र करना सीखो

जो पिता की कदर करे,
वो कभी गरीब नहीं होता।
जिसने माँ की कदर कर ली,
वो कभी बदनसीब नहीं होता।।

जो भाई की कदर करता,
वो कभी चरित्रहीन नहीं होता।
जो गुरू की कदर करता है,
उस जैसा कोई खुशनसीब नहीं होता।।

अच्छा दिखने के लिए मत जियो,
बल्कि अच्छा बनने के लिए जियो।
जो झुक सकता है वह,
सारी दुनियाँ को झुका सकता है।।

अगर बुरी आदत समय पर न बदली जाये,
तो बुरी आदत जिन्दगी बदल देती है।
चलते रहने में ही सफलता है,
रूका हुआ तो पानी भी सड़ जाता है।।

मुसीबत सब पर आती है,
पर कोई बिखर जाता है
और कोई निखर जाता है।

सुनील पाटीदार
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन

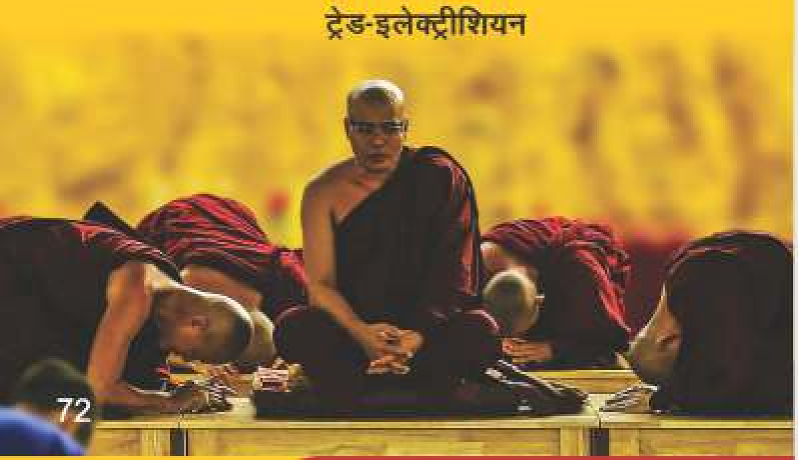

प्रेरक प्रसंग

एक बार महात्मा गाँधी के पास एक व्यक्ति आया, उसने गाँधी जी से कहा- ''मैं आपसे गीता का रहस्य जानने आया हूँ।'' महात्मा गाँधी उस समय आश्रम की भूमि फावड़े से खोद रहे थे। उन्होंने उस व्यक्ति को कुछ देर बैठने के लिए कहा और पहले की तरह भूमि खोदने लगे। जब गाँधी जी को भूमि खोदते-खोदते और उसे व्यक्ति को इंतजार करते-करते काफी देर हो गई तो उस व्यक्ति का धैर्य जवाब दे गया। वह गाँधी जी से बोला मैं इतनी दूर से आपकी ख्याति सुनकर गीता का मर्म समझने आया हूँ, किन्तु आपको सिर्फ काम का महत्व जान पड़ता है।

गाँधी जी ने हँसते हुए कहा भाई मैं आपको गीता का रहस्य ही समझा रहा हूँ। आश्चर्य चकित होकर उस व्यक्ति ने कहा-''कहाँ समझा रहे हैं ? मैं तो कब से यहाँ बैठा हूँ, आपने एक शब्द भी नहीं कहा।''गाँधी जी ने उसे समझाया- बोलने की आवश्यकता ही नहीं है। गीता का उपदेश यही है कि बस कर्म करो। मैं तबसे आपके सामने कर्म ही कर रहा था और गीता का रहस्य भी यही है, निरन्तर कर्म करो, फल की आशा मत करो।

महात्मा गाँधी का उत्तर सुनकर उस व्यक्ति को गीता का रहस्य अच्छी तरह समझ में आ गया और वह उन्हें प्रणाम कर वहाँ से चला गया। इस साधारण से प्रसंग का महत्वपूर्ण संदेश यह है कि प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति को कर्मशील रहना चाहिए। कर्मोन्मुखी आत्मवृत्ति मनुष्य को भौतिक प्राप्तियों के साथ-साथ आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी देती है।

विनिता घूसर
ट्रेप-कोपा (प्रथम सेमेस्टर)

शिक्षा

अंधकार को दूर कर जो प्रकाश फैला दे,
बुझी हुई आशा में विश्वास जो जगा दे।
जब लगे नामुमकिन कोई भी चीज,
उसे मुमकिन बनाने की राह जो दिखा दे,
.... वो है शिक्षा।।

हो जो कोई असभ्य, उसे सभ्यता का पाठ पढ़ा दे,
अज्ञानी के मन में, जो ज्ञान का दीप जला दे।
हर दर्द की दवा जो बता दे,
.... वो है शिक्षा।।

वस्तु की सही उपयोगिता जो समझाए,
दुर्गम मार्ग को सरल जो बनाए।
चकाचौंध और वास्तविकता में अन्तर जो दिखाए,
......................वो है शिक्षा।।

जो ना होगा शिक्षित समाज हमारा,
मुश्किल हो जाएगा सबका गुजारा।
इंसानियत और पशुता के बीच का अन्तर है शिक्षा......
शान्ति, सुकून और खुशियों का जन्तर है शिक्षा.........
भेदभाव, छुआछूत और अंधविश्वास,
दूर भगाने का मन्तर है शिक्षा......

जहाँ भी जली शिक्षा की चिंगारी,
नकारात्मकता वहाँ से हारी।
जिस समाज में हो शिक्षित नर-नारी,
सफलता-समृद्धि खुद बने उनके पुजारी।।
इसलिए आओ शिक्षा का महत्व समझें हम,
आओ पूरे मानव समाज को शिक्षित करें हम।

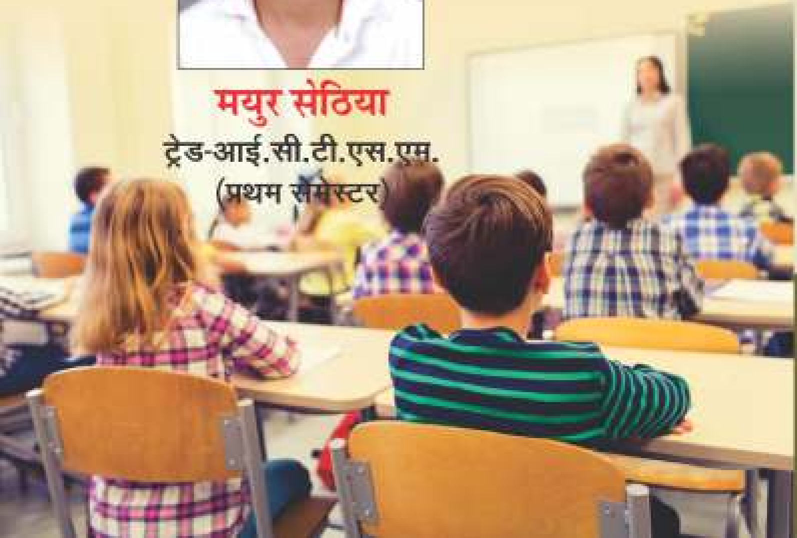

मयुर सेठिया
ट्रेड-आई.सी.टी.एस.एम.
(प्रथम सेमेस्टर)

प्रतिक्षा

भगवान बुद्ध को प्यास लगी थी। शिष्य आनन्द पास की पहाड़ी झरने से पानी लेने गए। उन्होंने देखा कि झरने से अभी-अभी बैलगाड़ियाँ गुजरी हैं, और जल गंदा हो गया है। वे वापस लौट आये और बुद्ध से बोले- मैं पीछे छूट गई नदी पर जल लेने जाता हूँ। इस झरने का पानी बैलगाड़ी के कारण गंदा हो गया, किन्तु भगवान बुद्ध ने आनन्द को वापस उसी झरने पर भेजा। तब भी पानी साफ नहीं हुआ था। आनन्द लौट आए। ऐसा तीन बार हुआ।

चौथी बार जाने पर आनन्द हैरान रह गया। मिट्टी व सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ गए थे। पानी आईने की भाँति चमक रहा था। वे पानी लेकर लौट आए।

भगवान बुद्ध बोले-''आनन्द हमारे जीवन के जल को भी बुरे विचारों वाली बैलगाड़ियाँ रोज-रोज गंदा कर देती है और हम बुरे काम करने को तत्पर हो जाते है।

यदि हम मन की झील के शान्त होने की थोड़ी प्रतीक्षा कर लें, तो सब कुछ स्वच्छ हो जाता है, उसी झरने की तरह।''

यशवन्त तेली
ट्रेड-इलेक्ट्रीशियन
(प्रथम सेमेस्टर)

शिक्षा का महत्व

मुकेश कुमार सुथार
ट्रेड- इलेक्ट्रोनिक्स मैकेनिक

''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' अर्थात् अंधकार से मुझे प्रकार की ओर ले जाओ। प्रकाश में व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देता है, अंधकार में नहीं।

शिक्षा का क्षेत्र सीमित न होकर विस्तृत है। व्यक्ति अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी शिक्षा का पाठन करता है, वह जिन्दगी में नई-नई वस्तुओं तथा तकनीकों को अपने जीवन में उतारता है तथा वह उसके प्रति और विस्तृत जानने की इच्छा रखता है।

विद्या एक सर्वश्रेष्ठ धन है, जिसे जितना संचित करके रखेगें, वह उतना ही कम होता चला जायेगा इसके विपरित विद्या का अधिक से अधिक प्रसारित करने तथा फेलाने पर यह अधिक विस्तृत एवं विशाल होती है।

विद्या और सुख एक साथ प्राप्त नहीं हो सकते। सुख चाहने वाले को विद्या और विद्या चाहने वाले को सुख त्याग देना चाहिए।

चालाक पत्नी

एक महाशय अत्यधिक भुलक्कड़ स्वभाव के थे। जब भी वे काम से शहर से बाहर जाते तो पत्नी को पत्र तक लिखना भूल जाते। उनकी इस आदत से तंग पत्नी ने एक बार स्वयं ही उनके नाम से पत्र लिखकर उनकी जेब में डाल दिया, ताकि वे दूसरे शहर में पहुँचते ही डाक में डाल दें।

चलते समय पत्नी उन्हें याद कराती हुई बोली- '' सुनिए जी, स्टेशन पर उतरते ही चिट्ठी लेटर बॉक्स में डाल देना''। ''हाँ-हाँ समझ गया।'' पति लापरवाही से बोला। गाड़ी से उतर कर जैसे ही वह स्टेशन से बाहर निकल रहे थे, किसी व्यक्ति ने कंधा थपकाकर कहा- ''मिस्टर चिट्ठी डालना तो भूल गये, जल्दी उसे बक्से में गिरा दो।''

''अजीब इंसान है। इसका उस चिट्ठी से क्या संबंध ?'' खीझकर बुदबुदाते वे आगे बढ़े और सामने लगे लेटर बॉक्स में पत्र डाल दिया। ''देखना भूलना नहीं, आपको चिट्ठी पोस्ट करनी है।'' एक दूसरे अजनबी ने फिर टोका।

''कमाल है। सारा शहर ही इस चिट्ठी के बारे में जानता है।'' वह इस बात पर हैरान था। पत्र पोस्ट करके वह अपने कार्यालय में पहुँचा, तो एक खूबसूरत सी लड़की खिलखिलाते हुए बोली, ''सर चिट्ठी डालना भूलिएगा नहीं।''

''हे भगवान ! हद हो गई।'' वे बौखला पड़े। मैं आप लोगों को कैसे बताऊँ कि मैंने चिट्ठी कब की पोस्ट कर दी है।

उस लड़की ने कहा ''तो आपके कोट के पीछे जो पर्ची लटकी है, क्या उसे हटाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती हूँ सर ?'' उस पर्ची पर लिखा था- कृपया मेरे पति को याद दिलाते रहें कि उन्हें चिट्ठी डाक में डालनी है।''

दीपक कुमार गुप्ता
ट्रेड- फीटर (प्रथम सेमेस्टर)

जादू या विज्ञान

रंगमंच पर प्रस्तुत की जाने वाली प्राचीनतम कलाओ मे एक जादूगरी है। आज यह कला जिस स्तर पर पहुँची है, वह सदियो से इसकी प्रस्तुति और शैली मे हो रहे परिवर्तनो का विकसित रूप है। जादू कोई वास्तव में जादू नहीं होता बल्कि वह विज्ञान की मदद से रचा गया एक नाटक होता है। मैं भी यहाँ कुछ ऐसे ही प्रयोगों को सक्षिप्त रूप मे आपके सामने रख रहा हूं।

चेतावनी : कृपया प्रयोग करते समय पूर्ण सावधानी बरतें। क्योंकि सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

- यदि आप लायकोपोडियम पाऊडर मला अपना हाथ पानी मे डालेगे तो पानी से बाहर निकलने पर वह पूरी तरह सूखा रहेगा।
- फिनोप्थालीन एल्कोहल और अमोनिया को पिलाकर बनाया गया घोल लाल स्याही के समान प्रतीत होगा। यदि आप इससे लिखें, तो लिखाई अदृश्य हो जायेगी।
- ताश के पत्तो पर लगे दाग मिटाने के लिए उन्हें कपूर के स्पिरीट मे डूबे रूई के फोहे से पोंछे साफ हो जायेगे।
- यदि कपडे को बोरिक एसिड और बोरेक्स के पानी के मिश्रण में डुबोकर निकाला जाए, तो वह आग नही पकडेगा।
- कोबॉल्ट क्लोराईड के पानी मे यदि रूमाल भिगोया जाए, तो गर्म करने पर वह नीले रंग का हो जाएगा।
- गिलास मे टिन्चर आयोडीन की कुछ बूंदे डालकर उसे घूलने दें, इसमें डाला हुआ पानी शराब जैसा लगेगा।
- यदि मैंगनेस सल्फेट और सोडियम कार्बोनेट के पानी के साथ दो अलग-अलग मिश्रण तैयार किए जाएं और फिर उन्हें एक गिलास मे डाला जाए तो वह दूध की तरह सफेद हो जाएगा।
- ठोस कार्बन डाईऑक्साईड गैस में ड्राई बर्फ का एक कण गुब्बारे में डालने पर गुब्बारा फुलाया जा सकता है।
- कॉपर नाईट्रेट के पतले घोल से लिखा गुप्त संदेश कागज को थोड़ा गर्म करने पर पढ़ा जा सकता है।
- अमोनियम हाईपर क्लोराईट से लिखा संदेश भी कागज गर्म करने पर दिखने लगेगा।
- बंद लिफाफे पर ईथर का घोल रूई से मलते ही कुछ क्षणो के लिए अंदर लिखा संदेश बाहर दिखने लगेगा।
- सिल्वर नाईट्रेट के कुछ दाने धधकते कोयले पर छिडकने से वे चांदी के टुकडे की भांति दिखेंगे।
- मोमबत्ती की लौ पर मैग्नेशियम का चूर्ण छिड़कते ही सफेद फ्लैश लाईट चमकेगी।
- किसी प्लेट पर सिल्वर नाईट्रेट से लिखकर उस पर साँस छोड़िये, लिखाई अदृश्य हो जाएगी।
- कोबॉल्ट नाईट्रेट से लिखे अक्षरो को यदि ऑक्सिलिक एसिड के हल्के घोल से गीला किया जाए तो नीले रंग के दिखाई देने लगेंगे।
- अमोनियम क्लोराईड को गर्म करने पर धुंए के घने बादल उड़ने लगते हैं।
- साबुन से लिखे संदेश पर राख मलने से वह अदृश्य से दृश्य हो जाता है।
- फिटकरी के घोल में डुबोया गया रूमाल आग नहीं पकडेगा।
- किसी स्लेट पर सल्फ्युरिक एसिड से कोई चीज बनाइयें। वह अदृश्य होगा। स्लेट को लोहे के एस्लेट से धाने पर वह चित्र दिखाई देने लगेगा।
- सोडियम हाइपोसल्फेट के घोल मे भिगोया हुआ रूमाल मोमबत्ती की लौ पर रखने से भी नहीं जलेगा।

- एल्यूमिनियम के चूर्ण : इस्पात के फिलिग और लायकोपोडियम का मिश्रण मोमबत्ती पर फेंकने से इन्द्रधनुषी रंग बिखरेंगे।
- एल्यूमिनियम और सोडियम पर आक्साईड के चूर्ण में पानी मिलाने से धुंआ पैदा किया जा सकता है।
- सल्फ्यूरिक एसिड और पानी समान मात्रा मे मिलाने से तापमान बढ़ जाता है और पानी बहुत गर्म हो जाता है।
- सिगरेट के सिरे पर एल्यूमिनियम और सोडियम पर ऑक्साईड रखकर आप बर्फ से वह सिगरेट जला सकते है।
- एक मोमबत्ती में क्रोमिक एसिड के कुछ कण और दूसरी मे पूर्ण मिथेल एल्कोहल की कुछ बूंदे रखे। इन दोनो मोमबत्तियों को आपस मे स्पर्श कराएं मोमबत्ती की लौ जल उठेगी।
- पोटेश्यिम नाईट्रट के घोल मे भीगी सिगरेट जलाते ही तेजी से जलकर समाप्त हो जाएगी।
- मांड से लिखा संदेश टिकचर आयोडीन लगाने पर काला रंग दिखाई देने लगता है।
- सिल्वर नाईट्रेट के पतले घोल से लिखा कोई संदेश हल्का गर्म करने पर गहरे गुलाबी रंग का दिखेगा।
- निकल क्लोराईट के पतले घोल से लिखा संदेश थोडी सी गर्मी देने पर दिखने लगेगा।
- मर्क्यूरस नाईट्रट के तीव्र घोल से लिखे अदृश्य संदेश पर यदि अमोनिया की भाप डाली जाए तो वह संदेश पढ़ा जा सकता है।
- पोटेशियम ब्रोमाइड के घोल से लिखे शब्दो पर कॉपर सल्फेट का घोल लगाने पर लिखाई पीली हो जाती है।
- सल्फ्यूरिक एसिड और पानी को 1:10 के अनुपात को मिलाकर लिखें कागज गर्म करने पर लिखाई काले रंग मे दिखाई देने लगेगी।

नोट -: कृपया अपनी प्रयोग की सारी चीजें व रसायन वाले बंद अलमारिया बॉक्स मे रखें तथा प्रयोग के समय रसायन को शरीर व आँखो से दूर रखे। प्रयोग सावधानी से किसी वयस्क व्यक्ति की उपस्थिति मे ही करें। असावधानी या अत्यधिक-आत्मविश्वास घातक हो सकता है।

दृष्टिकोण की श्रेष्ठता

शुभम शर्मा
एम.एम.वी, (तृतीय सेमेस्टर)

जिनका दृष्टिकोण उत्तम है, उनके हाथ मे अनुपयोगी चीज भी बढ़िया बन जाती है। वे अपनी अभिरूचि के अनुरुप ही उसे ढालते हैं। संत इमर्सन का दावा था कि वे नरक में जाकर वहां भी स्वर्ग का वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं।

सुरूचि का जादू सामान्य और तुच्छ वस्तुओं एवं व्यक्तियों को भी सुन्दर बना देता है किन्तु यदि दृष्टिकोण दूषित है तो अच्छाई भी धीरे-धीरे बुराई के रुप में परिणित हो जाएगी। साँप के पेट में जाकर दूध भी विष हो जाता है। कुसंस्कारी व्यक्ति अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों एवं पदार्थों को भी गन्दा बना देते हैं। दृष्टिकोण की श्रेष्ठता ही वस्तुतः मानव जीवन की श्रेष्ठता है।

उत्कृष्टता का गौरव सदा अक्षुण्ण रहा है। धूर्तता और धोखेबाजी कितनी ही बढ़ जाए, सज्जनों का मार्ग उनके कारण कितना ही कंटकाकीर्ण क्यों न हो जाए, फिर भी अंततः उत्कृष्टता को ही स्थिरता और सफलता का श्रेय मिलता है। परीक्षा में ऊंचे नम्बरों से पास होने वाले छात्रों की हर क्षेत्र में मांग रहती है, जबकि निम्न श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर उनकी उन्नति सीमित हो जाती है।

जीवन एक परीक्षा है, उसे उत्कृष्टता की कसौटी पर ही सर्वत्र कसा जाता है, यदि खरा साबित न हुआ जा सके, तो समझना चाहिए कि प्रगति का द्वार अवरूद्ध ही है।